अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

सत्ता का हस्तान्तरण

कुलदीप सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
पर्यवेक्षक : प्रोफेसर (डॉ०) विनय कुमार पाठक,
इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
सह–पर्यवेक्षक : प्रवीन मान,
अस्सिटैंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हिन्दू गर्ल्ज कॉलेज, सोनीपत

सारांश

भारत को लम्बे समय तक औपनिवेशिक राज्य बनाए रखने के बाद ब्रिटिश साम्राज्य के समक्ष भारत में अपने अन्तिम समय में भारत की स्वतन्त्रता को लेकर एक बड़ी चुनौती थी। भारत में बढ़ती साम्प्रदायिक गतिविधियों ने अंग्रेजी सरकार की चुनौतियों को और भी गहरा कर दिया। इसके पीछे बड़ा कारण यह भी था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं के बीच कोई समझौता नहीं बन पा रहा था। मुस्लिम लीग विशेष तौर पर मुहम्मद अली जिन्ना के अड़ियल स्वभाव के कारण भारतीय नेताओं व ब्रिटिश सरकार के बीच 'भारतीय स्वतन्त्रता' की बातचीत सफल नहीं हो पा रही थी। इसी समय भारत में 1945–46 का नौसैनिक विद्रोह बंगाल का तेभागा आन्दोलन और आजाद हिन्दी फोज व सैनिकों की रिहाई का आन्दोलन चल रहा था। इसलिए अंग्रेजों को भारतीयों के हाथों में सत्ता सौंपने के लिए नए तरीके से विचार करना पड़ा।

सूचक शब्द :– ओपनिवेशिक, साम्प्रदायिक, स्वतन्त्रता, आन्दोलन, राष्ट्र, गतिविधि, राष्ट्रवाद, विद्रोह, साम्राज्यवादी, महायुद्ध, अन्तरिम, स्थानान्तरण, हस्तान्तरण, समुदाय, सौहार्द, शासन, रिहाई, उत्तरदायी, गवर्नर, प्रत्यक्ष, अधिनियम, अधिराज्य, स्वाधीनता, अराजकता, जनसंख्या, मताधिकार, प्रतिनिधित्व, सम्मेलन, सहानुभूति, अवरोध, नरेश, सिद्धांत।

साम्प्रदायिक गतिविधियाँ

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना से पहले हिन्दु व मुस्लिम समुदाय में परस्पर सौहार्द की भावना देखने को मिलती है, परन्तु भारत में अंग्रेजों के शासनकाल में देखने को मिलता है कि हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर साम्प्रदायिक झगड़े होने शुरू हो गए थे। कूपलैण्ड महोदय के द्वारा बनारस की एक साम्प्रदायिक घटना का उल्लेख किया गया है जो 1809 ई० में घटित हुई थी। कूपलैण्ड जो कि एक साम्राज्यवादी इतिहासकार था,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

लिखता है कि ''अंग्रेजों का भारत में बन रहने का एकमात्र कारण हिन्दु–मुस्लिमों के परस्पर विवाद हैं।'' 1923 से 1928 के बीच भारत में 88 दंगों की अधिकारिक जानकारी उपलब्ध होती है। इस दंगों में 400 से अधिक लोगों के मारे जाने की जानकारी मिलती है। इतिहासकार विपिनचन्द्र लिखते हैं कि सर्वप्रथम साम्प्रदायिक दंगे बंगाल से शुरू हुए जो बहुत शीघ्र उत्तर भारत में फैल गए। अगस्त 1946 में कलकत्ता में साम्प्रदायिक दंगों की वजह से पाँच हजार से अधिक लोग मारे गए। विभाजन के दोरान उत्तर भारत में भी बड़े स्तर पर दंगे हुए।

द्वितीय वि"व युद्ध

द्वितीय वि"व युद्ध की शुरूआत होने के कुछ दिनों के बाद ही भारतीय वायसराय के द्वारा भारत को युद्ध में शामिल किए जाने की घोषणा कर दी गई, जिसके कारण भारतीय जनता का सरकार के प्रति विरोध और भी कड़ा हो गया। ब्रिटि"ा पार्लियामेंट के द्वारा 'गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया अमेडिंग एक्ट' पारित कर वायसराय को अतिरिक्त शक्तियाँ प्रदान की गई। यह भी भारतीयों के विरोध का एक बड़ा कारण था। अततः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा सरकार को भारत में कमजोर करने के लिए 1942 ई० में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' चलाया गया। द्वितीय वि"व युद्ध ने ब्रिटि"ा साम्राज्यवादी नीति की कमर तोड़ दी। परिणामस्वरूप महायुद्ध के प"चात् अंग्रेजों के द्वारा भारत में शासन चलाना काफी मु"किल हो गया था।

महायुद्ध के प"चात् वै"वक बदलाव

इस महायुद्ध के प"चात् हुई जन–धन हानि को मद्देनजर रखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वै"वक शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया। जिसका मुख्य उद्दे"य वि"व में शांति कायम रखना, राष्ट्रों के समान अधिकारों व आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के आधार पर राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना था। वि"व के अधिकतर राष्ट्रों ने इसकी सदस्यता स्वीकार कर ली।

युद्ध के प"चात् अफ्रीका एवं ए"िया के अनेक दे"ाों में राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता की भावना हिलोरे लेने लगी। यूरोप की साम्राज्यवादी नीति के विरूद्ध आन्दोलन तीव्र हो गए। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजबेल्ट के द्वारा अंटलांटिक चार्टर की घोषणा के बाद उपनिवे"ाों में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

एक नए उत्साह का संचार हुआ। परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद का पतन हुआ और उपनिवे"ा स्वतंत्र हुए।

आजाद हिंद फौज व नौसैनिक विद्रोह

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज ने भारत में ब्रिटि"ा साम्राज्य की जड़े हिला कर रख दी थी। आजाद हिंद फौज को भारतीय जनता की सहानुभूति भी प्राप्त थी। दूसरी तरफ 1946 में हुए नौसैनिक विद्रोह ने भी अंग्रेजों को भारत के विषय में सोचने पर मजबूर कर दिया था।

सी०आर० फार्मूला

इसके तहत केन्द्र में कांग्रेस व लीग के सहयोग से एक अस्थायी सरकार बनाई जाएगी। इसमें प्रस्ताव रखा गया कि लीग भारत को स्वतन्त्रता की मांग के पक्ष में है और सरकार बनाने में सहयोग करेगी। पूर्व व उत्तर–प"िचम वाले क्षेत्रों में व्यस्क मताधिकार के आधार पर स्थानान्तरण का निर्णय लिया जाएगा। जनसंख्या का स्थानान्तरण स्वेच्छा से होगा।

पाकिस्तान की मांग

जिन्नाह के द्वारा राजगोपालाचारी के फार्मूले की आलोचना की गई। जिन्नाह स्वतन्त्रता से पहले भारत के विभाजन अर्थात् पाकिस्तान की मांग पर अड़े हुए थे। उसके अनुसार मुस्लिमों को गला–सड़ा व विकलांग पाकिस्तान दिया जा रहा है। सी०आर० फार्मूले की असफलता के बाद वायसराय के द्वारा कांग्रेस नेता भूला भाई देसाई और लीग के नेता लियाकत अली के साथ मिलकर एक नई योजना तैयार की।

वैवेल योजना

लार्ड वैवेल के द्वारा 25 जून 1945 को ि"ामला में भारतीय नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें सम्मेलन के उद्दे"य निर्धारित किए गए कि भारत की साम्प्रदायिक समस्या का हल खोजा जाए। वायसराय की कार्यकारिणी में हिन्दुओं व मुसलमानों को समान प्रतिनिधित्व दिया जाए। कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद ने मांग रखी कि राष्ट्रीय सरकार और दे"ाी नरे"ाों के बीच कोई अवरोध उत्पन्न ना हो। परन्तु जिन्नाह लीग को कांग्रेस के बराबर अधिकार दिलवाना चाहते थे। दोनों पक्षों में समझौता न होने की स्थिति में यह सम्मेलन भी असफल रहा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

1945–46 के आम चुनाव

दे"ा ने 1945–46 ई० में एक बार फिर आम–चुनाव हुए। इन चुनावों से कांग्रेस को अच्छी सफलता हासिल हुई। कांग्रेस के द्वारा केन्द्रीय विधायिका में 102 में से 57 सीटों पर जीत दर्ज की गई। कांग्रेस मुस्लिम आरक्षित सीटों पर भी 86.6 प्रति"ात वोट लेने में कामयाब हुई। इन चुनावों में लीग का प्रद"ार्न भी अच्छा रहा परन्तु उसे पंजाब में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। कांग्रेस ने असम और पि"चमोत्तर सीमा प्रान्त से भी बहुमत हासिल किया। ये दोनों क्षेत्र पाकिस्तान के लिए मांगे जा रहे थे। तत्कालीन वायसराय के द्वारा भी 19 सितम्बर 1945 को पुनः भारत के लिए उत्तरदायी सरकार की घोषणा की गई।

क्रिप्स मि"ान

भारत सचिव पैथिक लारेन्स के द्वारा घोषणा की गई कि ब्रिटि"ा सरकार भारतीयों के सहयोग से भारत में स्वराज स्थापित करना चाहती है। ब्रिटि"ा कैबिनेट के द्वारा बोर्ड ऑफ ट्रेड के अध्यक्ष सर स्टेफर्ड क्रिप्स, भारत सचिव पैथिक लारेन्स और नौ सेना के मंत्री ए०वी० अलैक्जेंडर भारत आए। इस मि"ान का मुख्य उद्दे"य भारतीयों के हाथों में सत्ता हस्तांतरण कर एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करना था। ब्रिटि"ा प्रधानमंत्री स्टीमेंट एटली के द्वारा ब्रिटि"ा पार्लियामेंट में बोलते हुए भारत के लिए 'स्वतंत्रता' शब्द का प्रयोग किया गया और कहा कि भारत को स्वयं यह तय करना चाहिए कि उसकी भावी स्थिति क्या होगी तथा वि"व में उसका क्या स्थान रहेगा।

भारत में अन्तरिम सरकार की स्थापना

भारत सचिव के द्वारा भारतीय राजनीतिक दलों, वि"ोषकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग को अन्तरिम सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। मुस्लिम लीग के द्वारा मना करने पर पण्डित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में अन्तरिम सरकार का गठन किया गया। वैवेल के प्रयासों से मुस्लिम लीग ने अपने दूसरे दर्जे के नेताओं को भेजा। नई सरकार में सबसे महत्वपूर्ण विभाग, वित्त विभाग लीग को दिया गया।

ऐटली की घोषणा

भारत में मुस्लिम लीग के द्वारा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाए जाने व अन्तरिम सरकार के गठन के प"चात् साम्प्रदायिक हिंसा जोर पकड़ती जा रही थी। ब्रिटि"ा सरकार भारत में फैली अराजकता से भली–भांति परिचित थे। भारत में स्थिति ब्रिटेन के नियंत्रण से

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

बाहर होती जा रही थी। ऐसी स्थिति में ब्रिटि"ा प्रधानमंत्री क्लीमेट ऐटली के द्वारा घोषणा की गई कि ब्रिटि"ा सरकार के द्वारा जून 1948 से पहले ही उत्तरदायी भारतीयों के हाथों में सत्ता का हस्तांतरण कर दिया जाएगा।

माउण्टबेटन योजना व भारत विभाजन

भारतीयों के हाथों में सत्ता का हस्तांतरण करने के उद्दे"य से एडमिरल वाईकाउन्ट माउंटबेटन ने 24 मार्च 1947 को अपना पदभार ग्रहण किया और भारतीय नेताओं व प्रान्तों के गर्वनरों स विचार–विम"ा किया। तत्प"चात् उनके द्वारा 3 जून 1947 का एक योजना प्रस्तुत की गई, जिसे 'माउंटबेटन योजना' क नाम से जाना जाता है। इस योजना के अनुसार एक संविधान सभा के द्वारा संविधान का निर्माण किया जाएगा। भारत को दो भागों में विभाजित किया जाएगा। भारतोय नरे"ाों को किसी भी भाग में शामिल होने व स्वतंत्र रहने का अधिकार होगा। इसी योजना के आधार पर ब्रिटि"ा संसद व सम्राट के द्वारा 18 जुलाई 1947 को 'भारतीय स्वाधीनता अधिनियम 1947' पारित किया गया। इस योजना के फलस्वरूप माउंटबेन के द्वारा भारत और पाकिस्तान नामक दो अधिराज्यों की स्थापना 15 अगस्त 1947 को कर दी गई।

निष्कर्ष

द्वितीय वि"व युद्ध के प"चात् ब्रिटेन के समक्ष भारत में सत्ता बनाए रखना काफी चुनौतीपूर्ण था। भारत में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक दंगों को रोक पाना भी अंग्रेजों के लिए काफी मु"किल था। अततः बिटि"ा सरकार के द्वारा भारत में सत्ता भारतीयों के हाथ में सौप दिए जाने का निर्णय किया गया। इस कार्य को क्रियान्वित करने के लिए माउंटबेटन को भारत का वायसराय बनाकर भेजा गया। नए वायसराय के द्वारा भारतीय हालातों को देखते हुए भारत विभाजन की शर्त पर 15 अगस्त 1947 को सत्ता भारतीयों के हाथों में स्थांतरित कर दी गई।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

संदर्भ सूची

1. गौतम, एल०पी०, आधुनिक भारत का इतिहास एवं विरासत, एटलांटिक पब्लि"र्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 546–551
2. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत (1885–1947), राजस्थान प्रका"ान, दिल्ली, 2019, पृष्ठ 463
3. विपिनचन्द्र एवं अन्य, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे"ालय, दिल्ली वि"वविद्यालय, पृष्ठ 346–349
4. दत्त, रजनीपाम, आज का भारत, मैकमिलन इंडिया, 1977, पृष्ठ 462
5. विपिनचन्द्र एवं अन्य, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे"ालय, दिल्ली वि"वविद्यालय, पृष्ठ 351
6. विपिनचन्द्र, आधुनिक भारत में उपनिवे"ावाद और राष्ट्रवाद, मेघा पब्लि"िंग हाऊस, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ 570
7. दत्त, रजनीपाम, आज का भारत, मैकमिलन इंडिया, 1977, पृष्ठ 385
8. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रका"ान, दिल्ली, 2019, पृष्ठ 465
9. तेन्दुलकर, डी०जी०, द महात्मा, पब्लिके"ान डिवीजन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ 267
10. ताराचंद, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, पब्लिके"ान डिवीजन, नई दिल्ली, 2011, भाग–4, पृष्ठ 411
11. आजाद, इण्डिया विन्स फ्रीडम, ओरियन्ट, ब्लैक स्वान, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ 112–115
12. मेनन, वी०पी०, ट्रांसफर ऑफ पावर इन इण्डिया, ओरियन्ट ब्लैक स्वान, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 196
13. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रका"ान, दिल्ली, 2019, पृष्ठ 476–77
14. दुर्गादास, इण्डिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू एण्ड आफ्टर, रूपा प्रका"ान, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ 225
15. दत्त, रजनीपाम, आज का भारत, मैकमिलन इंडिया, 1977, पृष्ठ 586